Journey of the National Flag

The flag is a symbol of a country's values and pride which differentiates it from the rest of the world. It is an identity of the people in front of the world and is connected with patriotic emotions. The National Flag symbolizes the norms, values, belief and rules of the nation and its people. The importance of the flag and the waving of the flag outside the homes and offices is an important tool to express patriotic emotions and love for the country.

The National Flag of India, commonly known as *Tiranga* represents hope and aspirations of the people of India. It is a symbol of our national pride. The National Flag has three equal, parallel, and rectangular stripes of Indian saffron (Kesari) at the top, white in the middle, and Indian green at the bottom. A navy blue coloured Dharma Chakra or "Wheel of the Law", also called Ashoka Chakra, with 24 equally spaced spokes is placed in the centre of the white band. This Wheel has been derived from the Lion Capital of the Great Mauryan emperor Ashoka which was discovered at Sarnath near Varanasi.

The evolution of the Indian Flag represents the freedom struggle of India. The first Indian flag came into being in 1905. It was made by Sister Nivedita, an Irish disciple of Swami Vivekananda. The words *Vande Mataram* in Bengali script were written on it. The flag also contained figure of *Vajra* in the middle, the weapon of the Hindu deity, Indra.

In 1906, another flag, a tricolor was designed with three equal stripes, green at the top, yellow in the middle, and red at the bottom. This flag had symbols of Sun and a crescent along with eight half opened lotuses. This flag had the words *Vande Mataram* written in Devanagari script. This flag was hoisted by Sir Surendranath Bannerjee at Kolkata to mark unity of India against the Partition of Bengal.

Another version of the tricolor was developed in the year 1907 by Madam Bhikaji Cama, Veer Savarkar and Shyamji Krishna Varma. This flag had three bands – green at the top, saffron in the middle, and red at the bottom with *Vande Mataram* in Devanagari script on the centre band. This flag was hoisted on 22nd August, 1907 by Madam Bhikaji Cama in Stuttgart, Germany who became the first person to hoist Indian Flag on foreign soil.

In 1921, Pingali Venkaiah a young man from a small village in Andhra Pradesh, designed the Indian Flag at the insistence of Mahatma Gandhi. The flag had three bands with a large charkha super imposed on all the three bands. In 1931, a modified tricolor came into existence with three bands – saffron at the top, white in the middle, and green at the bottom, with a Charkha in dark blue color imprinted on the middle band.

In 1947, the India National Flag in its present form was adopted in a meeting of the Constituent Assembly on 22nd July, 1947. Leading a group of 70 women, Smt. Hansa Mehta presented the first National Flag of independent India to Dr. Rajendra Prasad, the Chairman of the Constituent Assembly, in the Parliament on the midnight of 14-15 August, 1947.

It first served as the National Flag of the Dominion of India from 15th August, 1947 to 26th January, 1950 and, thereafter, as the National Flag of the Republic of India.

In modern times, the Government envisages to transform the relationship between the National Flag and citizens to be personal rather than formal and institutional, so as to evoke the sense of patriotism in the hearts of the people. Har Ghar Tiranga campaign has been initiated by the Government to propagate this idea and to inspire the citizens to hoist the national flag at home.

Department of Posts salutes the spirit of the Indian National Flag and recognizes the sacrifices of all freedom fighters and unsung heroes who contributed to the rise of free and independent India and evolution of the Indian Flag. Department of Posts is pleased to issue Stamp on evolution of Indian Flag and salutes the Indian National Flag, a symbol of national pride of the entire nation.

Credits:

Stamps/FDC/Brochure/ Cancellation Cachet	:	Shri Brahm Prakash
Text	:	Referenced from the contents provided by National Archives of India

डाक विभाग

Department of Posts

राष्ट्रीय ध्वज की यात्रा

Journey of the National Flag

विवरणिका

BROCHURE

राष्ट्रीय ध्वज की यात्रा

किसी भी देश का ध्वज उसके मूल्यों और गौरव का प्रतीक होता है, जो उसे विश्व के अन्य देशों की तुलना में विशिष्ट पहचान देता है। यह विश्व के समक्ष, किसी देश–विशेष के लोगों की पहचान होता है, जिसके साथ लोगों की देशभक्ति की भावनाएं जुड़ी होती हैं। राष्ट्रीय ध्वज किसी भी देश एवं उसके नागरिकों की परंपराओं, मूल्यों, आस्था और नियम–कानूनों का प्रतीक होता है। राष्ट्रीय ध्वज का महत्व इतना अधिक है कि घरों और कार्यालयों के बाहर इसे फहराया जाना, देशभक्ति की भावना और देशप्रेम की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम माना जाता है।

भारत के राष्ट्रीय ध्वज को सामान्यतः 'तिरंगा' कहा जाता है। यह तिरंगा, भारत के लोगों की आशाओं और आकांक्षाओं को दर्शाता है। यह हमारे राष्ट्रीय गौरव का प्रतीक चिन्ह है। राष्ट्रीय ध्वज में तीन समान आकर की समानांतर और आयताकार पट्टियां हैं, जिसमें केसरी सबसे ऊपर है, मध्य में श्वेत पट्टी और सबसे नीचे हरी पट्टी है। श्वेत पट्टी के मध्य में समान दूरी पर 24 तीलियों (स्पोक्स) वाला, गहरे नीले रंग का धर्म चक्र अथवा ''न्याय चक्र" है, जिसे अशोक चक्र भी कहा जाता है। यह चक्र, महान मौर्य सम्राट अशोक के सिंह स्तंभशीर्ष से लिया गया है, जिसे वाराणसी के समीप सारनाथ में पाया गया था।

भारतीय ध्वज के डिजाइन में हुआ क्रमिक विकास, भारत के स्वतंत्रता संग्राम का द्योतक है। प्रथम भारतीय ध्वज 1905 में अस्तित्व में आया। इसे, स्वामी विवेकानंद की आयरिश शिष्या, सिस्टर निवेदिता ने डिजाइन किया था। इस ध्वज पर बांग्ला लिपि में 'वंदे मातरम्' अंकित था। इस ध्वज के मध्य में हिंदू देवता, इंद्र के शस्त्र 'वज्र' की आकृति भी अंकित थी।

1906 में एक अन्य तिरंगा झंडा डिजाइन किया गया। इसमें समान आकर की तीन पट्टियां थीं – ऊपरी पट्टी हरी, मध्य पीली और निचली पट्टी लाल रंग की थी। इस ध्वज पर आधे खुले हुए आठ कमल के पुष्पों सहित सूर्य और अर्धचंद्र अंकित था। इस ध्वज पर देवनागरी लिपि में 'वंदे मातरम्' अंकित था। इसका ध्वजारोहण बंगाल विभाजन के विरोध में भारत की एकता के रूप के रूप में सर सुरेंद्रनाथ बनर्जी ने कोलकाता में किया।

1907 में मैडम भीकाजी कामा, वीर सावरकर और श्यामजी कृष्ण वर्मा द्वारा तिरंगे का एक नया रूप डिजाइन किया गया। इस ध्वज में भी तीन पट्टियां थीं – शीर्ष पर हरी, मध्य में केसरिया और सबसे नीचे लाल। मध्य पट्टी पर देवनागरी लिपि में 'वंदे मातरम्' अंकित था।

22 अगस्त, 1907 को मैडम भीकाजी कामा द्वारा स्टुटगार्ट जर्मनी में इसका ध्वजारोहण किया गया। इस प्रकार विदेशी जमीन पर भारतीय ध्वज फहराने वाली वे पहली व्यक्ति थीं।

1921 में, महात्मा गांधी के अनुरोध पर आंध्र प्रदेश के एक छोटे से गांव के युवक, पिंगली वेंकैया द्वारा भारतीय ध्वज का डिजाइन तैयार किया गया। इस ध्वज में तीन पट्टियां थीं और तीनों पट्टियों के श्वेत एक विशाल चरखा अंकित था। 1931 में, तिरंगा एक नए रूप में सामने आया – इसमें शीर्ष पर केसरिया, मध्य में श्वेत और सबसे नीचे हरे रंग की पट्टी थी। साथ ही, मध्य की श्वेत पट्टी पर गहरे नीले रंग में एक चरखा अंकित था।

22 जुलाई, 1947 को संविधान सभा की बैठक में, भारतीय राष्ट्रीय ध्वज को इसके वर्तमान स्वरूप में अंगीकार किया गया। 14–15 अगस्त, 1947 की मध्यरात्रि को, 70 महिलाओं के एक समूह का नेतृत्व कर रही श्रीमती हंसा मेहता ने, संसद में संविधान सभा के अध्यक्ष डॉ. राजेंद्र प्रसाद को स्वतंत्र भारत का पहला राष्ट्रीय ध्वज भेंट किया।

यही ध्वज, 15 अगस्त, 1947 से 26 जनवरी, 1950 तक, भारतीय डोमिनियन का राष्ट्रीय ध्वज रहा और बाद में, भारत गणराज्य के राष्ट्रीय ध्वज के रूप में अपनाया गया।

आधुनिक समय में, सरकार की परिकल्पना यह है कि राष्ट्रीय ध्वज और देश के नागरिकों के बीच का संबंध औपचारिक और संस्थागत न रहते हुए निजी स्वरूप का हो, ताकि लोगों के हृदय में देशभक्ति की भावना जागृत हो। 'हर घर तिरंगा' अभियान सरकार द्वारा इसी उद्देश्य से शुरू किया गया है, ताकि लोगों को अपने घर पर राष्ट्रीय ध्वज फहराने की प्रेरणा हो।

डाक विभाग भारत के राष्ट्रीय ध्वज की मूल भावना को सलाम करता है तथा देश को स्वतंत्रता दिलाने वाले और राष्ट्रीय ध्वज के क्रमिक विकास की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान करने वाले सभी स्वतंत्रता सेनानियों और गुमनाम नायकों के बलिदान को नमन करता है। डाक विभाग 'राष्ट्रीय ध्वज की यात्रा' विषय पर स्मारक डाक–टिकट जारी करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करता है और समस्त देश के राष्ट्रीय गौरव के प्रतीक, भारत के राष्ट्रीय ध्वज को नमन करता है।

आभार :

डाक–टिकट / प्रथम दिवस आवरण / विवरणिका / विरूपण कैशे	:	श्री ब्रह्मप्रकाश
पाठ	:	राष्ट्रीय अभिलेखागार से प्राप्त सामग्री के आधार पर

तकनीकी आंकड़े

TECHNICAL DATA

मूल्यवर्ग	:	7500 पैसे
Denomination	:	7500 p
मुद्रित मिनियेचर शीट्स	:	200000
Miniature Sheets	:	200000
मुद्रण प्रक्रिया	:	वेट ऑफसेट
Printing Process	:	Wet Offset
मुद्रक	:	प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद
Printer	:	Security Printing Press, Hyderabad

The philatelic items are available for sale at Philately Bureaus across India and online at http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

मूल्य ₹ 5.00